

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 16, मोक्ष, ईश्वर का प्रेम

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जोहानिन धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 16 है, मोक्ष, ईश्वर का प्रेम।

हम जोहानिन धर्मशास्त्र, जॉन के सुसमाचार की शिक्षा का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

जॉन में चर्च और परमेश्वर के लोगों सहित कई विषयों पर विचार करने के बाद, अब हम उद्धार की ओर बढ़ते हैं, और हम जो योजना बनाते हैं, उसके विभिन्न पहलुओं को देखना चाहते हैं। परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर का चुनाव, लोगों का उसका चयन, अनंत जीवन। कुछ स्थानों पर जॉन पिता द्वारा लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करने के बारे में बात करता है, यह शिक्षा कि अंतिम दिन, उद्धार की पूर्णता के रूप में, यीशु उन्हें जीवित कर देगा।

इसके अलावा, यह तथ्य कि यीशु परमेश्वर के लोगों की रक्षा करेगा। इसलिए उद्धार को देखने के छह अलग-अलग तरीके हैं, जिनमें से पहला परमेश्वर का प्रेम है। और हम यूहन्ना 3 में वापस आ गए हैं। यूहन्ना 3:16 से 21 तक।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो कोई उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

और न्याय का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और लोग अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय मानते हैं, क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई दुष्टता करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके काम प्रगट हों। परन्तु जो कोई सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उसके काम परमेश्वर में किए गए हैं।

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया, यह संभवतः पूरे शास्त्र में सबसे लोकप्रिय श्लोक है। यहाँ बताया गया है कि उसने संसार से किस तरह प्रेम किया, जिसके लिए उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। हमने थोड़ी देर पहले संसार के बारे में बात की थी। जॉन के सुसमाचार में इसके कई अर्थ हैं, और यहाँ, डीए कार्सन अपनी पुस्तक, द डिफिकल्ट डॉक्ट्रिन ऑफ़ द लव ऑफ़ गॉड में तर्क देते हैं कि हालाँकि यह विशालता की बात करता है, लेकिन यह इतना बड़ा संसार नहीं है जितना कि इतना बुरा संसार है।

जॉन में दुनिया भगवान की दुश्मन है। खैर फिर से, शब्द अस्पष्ट है, कभी-कभी इसका मतलब ग्रह, पृथ्वी है जिसे भगवान ने बनाया है, यह एक अच्छी चीज है। कभी-कभी यह लोगों को संदर्भित करता है जैसा कि यहाँ है।

इसमें पापी संसार के अर्थ भी हैं। सबसे पहले, यूहन्ना कहता है कि संसार में जो कुछ भी है, शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीवन का घमण्ड, वह सब परमेश्वर के विरुद्ध है और परमेश्वर के विरोध में है। संसार या संसार की वस्तुओं की अभिलाषा मत करो।

इसलिए, परमेश्वर उस संसार से प्रेम करता है जो उससे घृणा करता है। हम इसे पहले ही अध्याय 1, प्रस्तावना की आयत 5 में देख चुके हैं। प्रकाश अंधकार में चमकता है, और अंधकार ने उस पर विजय नहीं पाई है।

यह सच है कि इस शब्द का अनुवाद समझा जा सकता है, इसका अनुवाद दूर किया जा सकता है। पुराने अनुवादों में कहा गया है कि दुनिया ने इसे नहीं समझा है। हमने जोहानिन के दोहरे अर्थ, दोहरे अर्थ के बारे में बात की है, और कुछ लोगों को लगता है कि यहाँ भी यही स्थिति है।

क्योंकि दुनिया ईश्वर के खिलाफ है, यह ईश्वर का विरोध करती है, और वे अंग्रेजी शब्द का सुझाव देते हैं जिसके दो अर्थ हैं, महारत हासिल। प्रकाश अंधेरे में चमकता है, और अंधेरे ने इसे महारत हासिल नहीं की है। इसका मतलब है समझा, जैसे एक बच्चा अपने वर्तनी शब्दों, या उसके वर्तनी शब्दों में महारत हासिल करता है।

इसका मतलब है जीतना, जैसे कि बेहतर पहलवान ने मैट पर अपने प्रतिद्वंद्वी पर महारत हासिल की। अगर मुझे एक चुनना हो, जो मुझे लगता है कि शायद आप भी चुनेंगे, तो मैं वही करूँगा जो ESV ने किया है। प्रकाश अंधेरे में चमकता है।

संदर्भ में, सृष्टि में परमेश्वर का रहस्योद्घाटन, पतन के पश्चात पापी संसार में चमकता है। शब्द अनन्त जीवन का स्थान है। शब्द में मौजूद अनन्त जीवन, क्या मैंने संसार कहा? परमेश्वर के वचन में मौजूद अनन्त जीवन, पूर्व-अवतार पुत्र, त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति, सारी सृष्टि का स्रोत है।

पद 3, सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, उसके बिना कुछ भी उत्पन्न न हुआ। उसमें जीवन था, और वह अनन्त जीवन जो केवल वचन में बसा है, मनुष्यों की ज्योति है।

यह मानव जाति पर सामान्य रहस्योद्घाटन की चमक थी। प्रकाश अंधकार में चमकता है। प्रकाश का स्वभाव ही चमकना है।

यह एक, हम इसे एक नामिक वर्तमान कहते हैं। और अंधकार ने इसे बुझाया नहीं है, इस पर विजय नहीं पाई है। यह वह संसार है जिससे परमेश्वर प्रेम करता है, यूहन्ना 3.16। क्योंकि परमेश्वर ने उस संसार से इतना प्रेम किया जो इतना बुरा था, जिसने उसका विरोध किया, जिसने अपने पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया, यहाँ तक कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया।

भगवान ने प्यार किया और भगवान ने दिया। उनके देने से उनका प्यार जाहिर हुआ। हमें बताया गया है कि, ओह, प्यार भगवान की एक विशेषता है, और इसका भावुकता से कोई लेना-देना नहीं है; इसका भावना से कोई लेना-देना नहीं है।

खैर, यह भावुकता नहीं है, लेकिन इसमें भावनाएँ शामिल हैं। ओह, माना कि ईश्वर के संदर्भ में भावनाओं के बारे में बात करना कठिन है। मेरा एक सहकर्मी था जो ईश्वर के लिए थियोस शब्द का उपयोग करने के बारे में बात करना पसंद करता था।

परमेश्वर की भावनाएँ हमारी तरह नहीं हैं, जो अक्सर अस्थिर होती हैं और कभी-कभी पापपूर्ण भी होती हैं। एक ईश्वरीय मानवीय ईर्ष्या होती है, जहाँ पति या पत्नी अपने साथी को किसी और के साथ साझा नहीं करेंगे। एक अधर्मी ईर्ष्या होती है जिसके बारे में हम बहुत जागरूक हैं।

थियोस से भावनाएं कहा। इसका मतलब है, हम ईश्वर की तरह बने हैं। वह प्यार करता है, वह नफरत करता है, वह ईर्ष्यालु ईश्वर है।

उसने हमें अपने जैसा बनाया। बेशक, पतन के बाद से, हमारी भावनाएँ हमारी बाकी क्षमताओं और योग्यताओं की तरह ही विकृत हो गई हैं, लेकिन उसकी नहीं।

और हाँ, प्रेम उसकी विशेषताओं में से एक है। इसमें कार्य, शब्द, देना और भावनाएँ शामिल हैं। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया।

इस देने का नतीजा यह है कि जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, वह नाश नहीं होगा बल्कि अनंत जीवन पाएगा। जो कोई भी महत्वपूर्ण है, या पुराने अनुवाद, जो कोई भी। हम अब इस तरह से बात नहीं करते हैं।

लेकिन यूहन्ना का सुसमाचार, अपनी संप्रभुता और उद्धार की भावना के अनुसार, बहुत मजबूत है। और यह मजबूत है। हम अपने अगले व्याख्यान में ईश्वरीय चुनाव का अध्ययन करेंगे, अगर प्रभु की इच्छा हो।

हम देखेंगे कि परमेश्वर उद्धार में पूर्ण रूप से सर्वोच्च है, पिता लोगों को पुत्र को सौंपता है, जिसके परिणामस्वरूप वे विश्वास करते हैं और वे बचाए जाते हैं। और पुत्र उन्हें सुरक्षित रखता है। और हम देखेंगे कि, जैसा कि हमने पहले भी दो बार कहा है, पवित्रशास्त्र में विशिष्ट रूप से, यूहन्ना 15, पद 16 और 19 में, यीशु चुनाव का लेखक है।

ऐसा कहीं और नहीं है। आत्मा कभी भी लेखक नहीं होती। आमतौर पर यह पिता होता है, या बस दिव्य निष्क्रिय।

वे चुने गए थे, जो फिर से पिता के पास चला जाता। लेकिन यूहन्ना 15 में, यीशु ही चुने हुए हैं। तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है।

ईश्वरीय संप्रभुता। तीसरा, जैसा कि हम विस्तार से देखेंगे, अंशों को देखते हुए, चुनाव का तीसरा योहानियन विषय परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान है, और उन लोगों की भी जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं।

वे मेरा अनुसरण करते हैं, और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे। संप्रभुता पर एक मजबूत जोर। यीशु भेड़ों की रक्षा करता है।

मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। यह एक उपहार है, एक शाश्वत उपहार, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे। एक स्पष्ट कथन: डैन वालेस, एक प्रसिद्ध मध्यवर्ती ग्रीक व्याकरण लेखक, मध्यवर्ती और संदर्भ व्याकरण लेखक, ने संदर्भ में उपयोग के अनुसार व्याकरण का अध्ययन किया और किया, जो जबरदस्त है।

उनका कहना है कि यह कहने का सबसे मजबूत तरीका है कि वे कभी नाश नहीं होंगे, जो कि नए नियम की भाषा में उपलब्ध है। इसलिए, संप्रभुता हर जगह है, लेकिन यह वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी, जवाबदेही और दोषसिद्धि को बाहर नहीं करता है। और इसलिए, यह चर्च का काम है और व्यक्तिगत विश्वासी का काम है, क्योंकि परमेश्वर उपहारों को सक्षम बनाता है और सुसमाचार, उद्धार का मार्ग, जो कोई भी चाहे, उसे प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना अद्वितीय पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, अनन्त जीवन पाए। जो कोई भी। जो कोई भी।

हम उद्धार में परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास करते हैं। हम यह भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के लिए एक स्वतंत्र और सार्वभौमिक प्रस्ताव देने का आदेश दिया है। खैर, हम यह कैसे कर सकते हैं, यह जानते हुए कि परमेश्वर ने सभी को नहीं चुना है? हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें बताया है, और हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए साधनों का उपयोग करना चुना है।

1 थिस्सलुनीकियों 1:3 हम तुम सब के विषय में जो लगातार अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते हैं, सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 1:3 और अपने परमेश्वर और पिता के साम्हने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर आशा की दृढ़ता स्मरण करते हैं।

हे भाइयो, हम जानते हैं कि परमेश्वर के प्रिय लोगों ने तुम्हें चुना है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि हमने ईश्वरीय परिषदों में गहराई से खोजबीन की और यह पता लगाया कि सृष्टि से पहले परमेश्वर क्या कर रहा था। नहीं, नहीं।

हम इसे जानते हैं क्योंकि हमारा सुसमाचार आपके पास आया है, न केवल शब्दों में, बल्कि सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में और पूर्ण विश्वास के साथ। हम केवल तभी जानते हैं कि कोई व्यक्ति चुना हुआ है जब वह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है। वे अन्यथा विश्वास नहीं करते, क्योंकि जिन्हें परमेश्वर चुनता है, उन्हें वह प्रभावी रूप से अपने पास बुलाता या बुलाता है।

जॉन की भाषा में कहें तो, पिता जिन्हें बेटे को देता है, पिता उन्हें बेटे के पास खींचता है। और इसलिए, हम भगवान नहीं हैं। हम चुनाव नहीं करते।

हम क्रूस पर नहीं मरते, और हम मृतकों में से नहीं जी उठते, हालाँकि हम जी उठेंगे, लेकिन हमारा पुनरुत्थान यीशु के पुनरुत्थान का परिणाम है। उनका पुनरुत्थान ही हमारे पुनरुत्थान का कारण है।

हम सुसमाचार के लिए अपने दिलों को नहीं खोलते हैं जैसा कि पवित्र आत्मा करता है। त्रिएकता एक साथ काम करती है और जैसा कि हमने यूहन्ना 20 में देखा, सुसमाचार को साझा करने के लिए आत्मा की शक्ति में हमारा उपयोग करना उचित समझा है ताकि हम लोगों को उद्धार में अपने पास लाने में परमेश्वर के काम को देख सकें। जो कोई भी मसीह में विश्वास करता है, उसे नाश नहीं होना चाहिए बल्कि उसे अनन्त जीवन मिलना चाहिए।

नाश की भाषा बाइबल में नरक के बारे में बात करने के तरीकों में से एक है। इसमें कई रूपों का इस्तेमाल किया गया है। उनमें से एक है अनन्त मृत्यु, विनाश और नाश।

क्या इन्हें शाब्दिक रूप से लिया जाना चाहिए? खैर, ये वास्तविक दंड, मृत्यु, विनाश और नाश के बारे में हैं। लेकिन क्या इसका अर्थ, क्या यह खोए हुए लोगों के लिए अस्तित्व के अंत का संकेत देता है? नहीं। यह एक शाश्वत मृत्यु, दूसरी मृत्यु, एक शाश्वत नाश, नरक में एक शाश्वत पीड़ा है।

लेकिन यह परमेश्वर की योजना नहीं है। उसकी योजना बचाने की है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दोषी ठहराए, यूहन्ना 3:17, बल्कि इसलिए कि वह उसके द्वारा संसार को बचाए।

परमेश्वर ने उस संसार से प्रेम किया जिसने उससे घृणा की, उसने अपना पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यह यूहन्ना के सुसमाचार का एक अद्भुत और विस्मयकारी विषय है। अनन्त जीवन, साकार युगान्त विज्ञान के संदर्भ में, तथाकथित पहले से ही, विश्वासी के पास मौजूद है।

वास्तव में, यदि आप बार-बार नाक गिनते हैं, तो यूहन्ना के सुसमाचार में अनन्त जीवन अभी है। 17:3 इसे परिभाषित करता है। वह इसे संबंधपरक शब्दों में परिभाषित करता है।

यीशु ने अपनी महायाजकीय प्रार्थना में कहा कि यह अनन्त जीवन है, ताकि वे, जिन्हें आपने मुझे दिया है, पिता और पुत्र को जान सकें। अनन्त जीवन का अर्थ है पिता और पुत्र को अभी जानना। अनन्त जीवन का अर्थ है नई पृथ्वी पर पुनर्जीवित प्राणियों के रूप में पिता, पुत्र और आत्मा से प्रेम करना, उनसे प्रसन्न होना, उनकी आज्ञा का पालन करना, उनका आनन्द लेना, उनकी सेवा करना।

यूहन्ना 3:16 उचित रूप से प्रसिद्ध है। परमेश्वर का उचित कार्य बचाना है, उसका विचित्र कार्य निंदा करना है, और जो लोग परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास नहीं करते हैं, वे पहले ही निंदा किए जा चुके हैं। एक बार फिर, साकार युगांतशास्त्र।

अंतिम दिन के फैसले, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर द्वारा समय से पहले ही प्रकट कर दिए जाते हैं ताकि विश्वासी अपने उद्धार में आनन्दित हो सकें और अविश्वासी अपने उद्धारकर्ता की आवश्यकता को समझ सकें। परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया। 13:1 इसी विषय पर आगे बढ़ता है।

याद रखें कि संकेतों की पुस्तक 12 के अंत में समाप्त होती है, जहाँ यीशु दो बार कहता है, या जहाँ शास्त्र दो बार कहता है, यूहन्ना कहता है कि उसका समय आ गया है। और देखें कि 13:1 कैसे शुरू होता है। संकेतों की पुस्तक में, श्रोता दुनिया, यहूदी हैं।

महिमा या उत्कर्ष की पुस्तक में, अध्याय 13 से अंत तक, श्रोता शिष्य हैं। वे ऊपरी कमरे में जाते हैं, और यीशु दुनिया के लिए दरवाज़ा बंद कर देता है। ओह, और शिष्यों के लिए उनकी तैयारी का एक हिस्सा उन्हें दुनिया में सुसमाचार लाने के लिए प्रशिक्षित करना है।

लेकिन श्रोता संसार नहीं है। वह दुनिया के सामने संकेत या उपदेश नहीं दे रहा है और न ही उसे अविश्वास और विश्वास की प्रतिक्रिया मिल रही है। वह अध्याय 13 से 16 में ऊपरी कमरे में अपने 12 शिष्यों से निजी तौर पर बात कर रहा है।

17 में, वह अपने लिए, अपने शिष्यों के लिए, 11 के लिए, और उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जो शिष्यों के माध्यम से उस पर विश्वास करेंगे। यूहन्ना 13:1, अब फसह के पर्व से पहले, जब यीशु को पता चला कि दुनिया से पिता के पास जाने का उसका समय आ गया है, तो समय कहता है, समय का ध्यान रखो। यह सच है कि यूहन्ना एक अस्तित्ववादी सुसमाचार है, अगर इसका मतलब यह है कि यह ऐसा है जैसे कि यीशु सीधे मेरे दिल से बात कर रहा है।

यह सही है। तो इसका मतलब है कि यह इस अर्थ में अस्तित्वगत है कि यह समय और स्थान से अलग है, है न? गलत। यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए पर्व, अध्याय दो में फसह, अध्याय छह में फसह, समर्पण का पर्व, अध्याय सात में मण्डप, अध्याय 10 में समर्पण का पर्व, ये और फिर विदाई प्रवचनों में फसह, समय को चिह्नित करते हैं।

वे मुक्तिदायी इतिहास को आगे बढ़ाते हैं। समय की बातें भी यही कहती हैं, कम से कम वे जो कहती हैं, मेरा समय अभी नहीं आया है, उसका समय अभी नहीं आया था, और इसी तरह आगे भी। और फिर 12 के अंत में, उसका समय आ गया था।

और 13:1, यीशु जानता था कि उसका समय आ गया है, उसका समय आ गया है, समय और समय समानार्थी हैं, दुनिया से पिता के पास जाने के लिए। पहली बात जो इसमें कही गई है, उसे सुनिए, उसने अपने लोगों से प्रेम किया जो दुनिया में थे। हाँ, वह दुनिया से प्रेम करता है, यूहन्ना 3:16। लेकिन यहाँ, यह उस बारे में बात नहीं कर रहा है।

यह पिता द्वारा दिए गए लोगों से उसके प्रेम के बारे में बात कर रहा है। वह उनसे अंत तक प्रेम करता रहा। जोहानियन विद्वान यहाँ दोहरा अर्थ खोजते हैं।

निश्चित रूप से यह निम्नलिखित वचन छंदों से संबंधित है। और वह असाधारण रूप से एक सेवक की भूमिका निभाकर उनके लिए प्यार दिखाता है, यह शर्मनाक होगा। यह शर्मनाक होगा।

मैं इसकी तुलना ऐसे करता हूँ जैसे पादरी और उनकी पत्नी को रात के खाने पर आमंत्रित करने वाले पैरिशियन। भोजन के दौरान किसी समय पादरी कहते हैं, "मैं आपका बाथरूम साफ करना चाहता हूँ।" कौन सी गृहिणी? कौन सा पैरिशियन ऐसा करने देगा? पादरी कहते हैं, "मुझे आपका शौचालय साफ करना है।"

मुझे ऐसा नहीं लगता, पादरी जी। नहीं। वे लोगों को किसी और से बेहतर नहीं मानते।

लेकिन यह छोटा-मोटा काम पादरी के लिए नहीं है, जो आपके घर में मेहमान है और जिसे आप खाना परोस रहे हैं। और शायद कोई भी पादरी ऐसी अजीब बात नहीं कहेगा, लेकिन मुझे लगता है कि इससे यह बात समझ में आती है कि रब्बी द्वारा छात्रों के पैर धोना सामाजिक रूप से बहुत गलत था। सच तो यह है कि छात्रों ने रब्बी के लिए ऐसा भी नहीं किया।

इसलिए, जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहता है, जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझसे पहले था, वह पद में मुझसे बड़ा है। मैं तो उसके जूतों के फीते खोलने के भी लायक नहीं हूँ। यह अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा है।

यूहन्ना कह रहा है, "मसीहा।" मैं मसीहा नहीं हूँ। मैं एलिय्याह नहीं हूँ। मैं वह भविष्यवक्ता नहीं हूँ जिसकी भविष्यवाणी मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18 में की थी।

मैं मसीहा से इतना नीचे हूँ कि मैं उसके साथ वैसा रिश्ता रखने के भी योग्य नहीं हूँ जैसा कि सबसे छोटा नौकर अपने से ऊपर के लोगों से रखता है, यानी घर के बाकी सभी लोग। मैं ऐसा नहीं कर सकता, मैं ऐसा भी नहीं कर सकता। यह जॉन की गलती नहीं थी कि जॉन द बैपटिस्ट संप्रदाय विकसित हुआ।

हे भगवान। यह निश्चित रूप से उसकी गलती नहीं थी। उसके पास कोई अनुमान या आत्म-प्रशंसा नहीं थी, बस इसके विपरीत था।

13:1 में, यीशु अपने शिष्यों के प्रति अपने प्रेम को अंत तक उनसे प्रेम करके दिखाता है, जिसका अर्थ है, इस चरम उदाहरण में, उनके गंदे पैर धोना। लेकिन पाठक और विद्वान यह सोचने से खुद को नहीं रोक पाते कि इसका अर्थ उनके जीवन का अंत भी है, अपने मित्रों के लिए अपना जीवन देना। और वास्तव में, वह यही करता है।

वह उनके पैर धोता है। पतरस मुझे हंसाता है। सुसमाचार में उसका चरित्र एक जैसा है।

ओह माय, वह और जॉन दोनों कब्र की ओर दौड़ते हैं। जाहिर है, जॉन तेज़ है। जॉन किसी भी सामान्य इंसान की तरह हिचकिचाता है, जिसे पीटर वहीं ज़ूम करता है।

हे भगवान। आह, उसने कुछ बातें अस्पष्ट कर दीं, लेकिन परमेश्वर ने उसे जो उपहार दिए थे, वे आत्मा द्वारा और उसके द्वारा अपने स्वामी को धोखा देने और यूहन्ना 21 में यीशु द्वारा प्रतिपूर्ति के द्वारा वश में कर लिए गए थे। और वह अभी भी साहसी था।

ओह, वह कितना साहसी था! और वह अभी भी एक नेता था। सुसमाचारों में जब यीशु ने शिष्यों से बात की, तो अधिकांश समय जब यीशु ने उत्तर दिया, तो पतरस ने उत्तर दिया कि वह नेता था।

यह तो बस उसकी देन है। खैर, अब प्रेरितों के काम की किताब में, वह महान भलाई के लिए एक नेता बन जाता है। और यह उल्लेखनीय है।

वही गुण आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं, आत्मा द्वारा नियंत्रित होते हैं, और आत्मा द्वारा सशक्त होते हैं। और परमेश्वर उन्हें अद्भुत तरीकों से इस्तेमाल करता है। पैरों को धोने के प्रसंग में यीशु दो काम करते हैं।

वह शिष्यों के प्रति अपना प्रेम इस दर्दनाक तरीके से सिखाकर दिखाता है कि उन्हें प्रतिदिन अपने पापों को स्वीकार करने की आवश्यकता है। वे शुद्ध हैं। वे वहाँ हैं।

उन्होंने एक बार स्नान किया और उन्हें क्षमा कर दिया गया, लेकिन उनकी धूल, फिलिस्तीन की सड़के धूल भरी थीं और चप्पलों ने पैरों को गंदा कर दिया। और इसलिए, 1 तीमुथियुस 5, विधवाओं की सूची जो योग्य हैं और जो कोट, चर्च के समर्थन की हकदार हैं। उसने संतों के पैर धोए हैं।

यह एक महिला की ओर से एक विनम्र कार्य था जो लोगों को अपने घर में आमंत्रित कर उनके पैर धोने के लिए आमंत्रित कर रही थी। यीशु ऐसा करते हैं, उन्हें स्नान की आवश्यकता नहीं दिखाते हैं, बल्कि उस व्यक्ति के लिए जो नहा चुका है (यूहन्ना 13:10), उसे अपने पैरों को छोड़कर किसी और को धोने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह पूरी तरह से साफ है। और तुम साफ हो, लेकिन तुम में से हर कोई साफ नहीं है।

क्या इससे आपको परेशानी नहीं हुई होगी? वह यहूदा का ज़िक्र कर रहा है क्योंकि वह जानता था कि उसे कौन धोखा देगा। इसीलिए उसने कहा कि तुम सब लोग शुद्ध नहीं हो। बहुत कुछ चल रहा है।

वे बहुत उत्साहित हैं। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि वे इसे मिस करते हैं, लेकिन उन्होंने इसी क्रिया में उन्हें एक उदाहरण भी दिया। तो, यह दैनिक सफाई की आवश्यकता का एक उदाहरण है।

और निस्वार्थ सेवा का भी उदाहरण है। अगर मैंने, आपके गुरु और भगवान ने आपके पैर धोए हैं, तो आप भी एक दूसरे के लिए ऐसा ही करना चाहेंगे। ऐसा करने के लिए कोई भी स्वेच्छा से आगे नहीं आया।

बाद में अध्याय 13 में, हमें यीशु के द्वारा कहे गए सुन्दर शब्द मिलते हैं जो उसके लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम की गवाही देते हैं: यूहन्ना 13:34, और 35, 31। जब वह बाहर गया, तो यीशु ने कहा, "अब मनुष्य का पुत्र महिमावान हुआ, और परमेश्वर उसमें महिमावान हुआ।"

यदि परमेश्वर उसमें महिमावान होता है, तो परमेश्वर भी उसे अपने में महिमावान करेगा और तुरन्त महिमावान करेगा। महिमा के कई उपयोग हैं। जॉन की शैलीगत विशेषताओं में से एक है दोहराव।

छोटे बच्चों, जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ, तब तक तुम मुझे ढूँढ़ोगे। और जैसा मैंने यहूदियों से कहा था।

इसलिए अब मैं तुमसे कहता हूँ कि जहाँ मैं जा रहा हूँ, तुम वहाँ नहीं आ सकते। वे तुरन्त स्वर्ग में पिता के पास नहीं जा सकते, यह एक नई आज्ञा है। मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। सब लोग जान लेंगे कि तुम मेरे चेले हो। अगर तुम एक दूसरे से प्रेम करते हो, तो यह बहुत अच्छी बात है।

यहाँ यीशु की प्रसिद्ध प्रेम आज्ञा है। मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ। तुम अभी मेरा अनुसरण नहीं कर सकते।

तुम्हारा जोर एक दूसरे से प्रेम करने पर होना चाहिए। एक दूसरे के प्रति उनके प्रेम का माप अविश्वसनीय है। जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।

और वास्तव में, विश्वासियों का आपसी प्रेम दुनिया के लिए उनकी गवाही का हिस्सा है। इससे सभी लोग जान जाएँगे कि तुम मेरे शिष्य हो। यदि तुम एक दूसरे के लिए प्रेम रखते हो, तो वे वहीं कर रहे हैं जो यीशु ने उनके लिए किया।

वे इसे एक दूसरे को भी दे रहे हैं। जॉन ने अपने शत्रुओं से प्रेम करने पर उतना जोर नहीं दिया है जितना कि सारांश में दिया गया है। लेकिन यहाँ वे, निश्चित रूप से, एक दूसरे के लिए प्रेम दिखाने के लिए हैं।

अध्याय 15 में, दाखलता और शाखाओं में, फल को सुसमाचार प्रचार या सुसमाचार प्रचार के परिणामों के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है। क्या यह एक अनुप्रयोग है? बेशक, यह है। लेकिन फल प्रार्थना का उत्तर, आज्ञाकारिता, आनंद और एक दूसरे के लिए प्रेम है।

यूहन्ना 15:8, "इस से मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही मेरे चेले ठहरोगे। दाखलता की सच्ची डालियाँ फल लाती हैं, क्योंकि उनमें अनन्त जीवन है। बिना फल के अनन्त जीवन नहीं।"

एक बार फिर, मैं यही कहूँगा, यह दयालुता है। क्योंकि अगर कोई श्रोता अपने जीवन को देखता है और उसमें कोई फल नहीं पाता है, तो यह बहुत बुरा संकेत है और यह उन्हें मसीह की ओर ले जा सकता है। जैसा पिता ने मुझसे प्रेम किया है, यूहन्ना 15:9, वैसे ही मैंने भी तुमसे प्रेम किया है।

मेरे प्रेम में बने रहो। इसका क्या मतलब है? अगर तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उनके प्रेम में बना हुआ हूँ।

यह 1 यूहन्ना की तरह ही लगता है, जहाँ सत्य पर विश्वास करना, धार्मिक जीवन जीना और एक दूसरे से प्रेम करना एक दूसरे से इतने जुड़े हुए हैं, कि वे सभी एक साथ चलते हैं, जाहिर है। वे सभी, इस भाषा का उपयोग करने के लिए, वे सभी दाखलता में बने रहने के फल हैं, यीशु। 1 यूहन्ना कहता है, उसमें बने रहना और उसमें बने रहना, वह उस तरह से बने रहना का उपयोग करता है, लेकिन इस दाख की बारी की कल्पना का नहीं।

यह मेरी आज्ञा है, पद 12, आनन्द, पूर्ण आनन्द के विषय में कथन को छोड़कर, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यह कैसा आदर्श है। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम मेरे मित्र हो। विश्वासियों की पहचान एक दूसरे के प्रति प्रेम है। यह दुनिया को जानने का एक तरीका है, एक तरह से दुनिया को पता चलेगा, शुरुआती मूर्तिपूजकों में से एक ने ईसाइयों के बारे में कहा, देखो वे एक दूसरे से कैसे प्यार करते हैं।

हम इसे 16 में भी देखते हैं। एक समय आने वाला है जब मैं दृष्टान्तों और पहेलियों और रहस्यमयी बातों में बात नहीं करने जा रहा हूँ, लेकिन मैं आपको अपने पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बताऊँगा, यूहन्ना 16:25। उस दिन, आप अपने आप पिता से पूछ सकते हैं।

पिता के लिए, अध्याय 16 की आयत 27, क्योंकि पिता स्वयं तुमसे प्रेम करता है क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम किया है और यह विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर से आया हूँ। मुझे यह पसंद है। व्यंग्य के लिए क्षमा करें, अनजाने में व्यंग्य किया गया है।

यह बहुत बढ़िया है। वे उससे प्यार करते थे। यह जानना अच्छा है क्योंकि हमेशा ऐसा नहीं लगता।

उन्होंने विश्वास किया। यह जानना भी अच्छा है, क्योंकि हमेशा ऐसा नहीं लगता। पिता स्वयं तुमसे प्रेम करता है क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम किया है और यह विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर से आया हूँ।

मैं पिता से आया हूँ और अब दुनिया में आया हूँ और अब मैं दुनिया को छोड़कर पिता के पास जा रहा हूँ। अब तुम साफ-साफ बोल रहे हो।

हम इस बात से बहुत उत्साहित हैं। आह, पिता उनसे प्यार करता है जो उसके बेटे से प्यार करते हैं, जो उसके बेटे से प्यार करके विश्वासी नहीं बन जाते। वे विश्वास करते हैं।

इसका एक परिणाम न केवल पवित्रता है बल्कि परमेश्वर के पुत्र से प्रेम करना भी है। अध्याय 17 में, महान पुरोहितीय प्रार्थना में भी प्रेम के संकेत हैं, जैसा कि पद 20 में दिखाया गया है।

मैं केवल इन्हीं के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए भी प्रार्थना करता हूँ जो हे पिता, उनके वचन और उनकी गवाही के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसे तुम्हारा पिता मुझ में है और मैं तुम में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों। ताकि संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।

जो महिमा आपने मुझे दी है, वह मैंने उन्हें दी है। यह एक आश्चर्यजनक कथन है।

यह वर्तमान भावना और महिमामंडन की पहले से ही भावना की बात करता है। हम सही ढंग से महिमामंडन के बारे में सोचते हैं कि यह अभी तक नहीं हुआ है। लेकिन इन चीजों के बारे में कई सालों तक सोचने के बाद मेरी थीसिस यह है कि पिछली चीजों की हर प्रमुख विशेषता पहले से ही है और अभी तक नहीं हुई है।

यह पहले ही आंशिक रूप से पूरा हो चुका है, और भविष्य में इसकी और भी बड़ी पूर्ति होगी। और यह यहाँ है - यहाँ वर्तमान महिमा है।

ताकि वे एक हो जाएँ जैसे हम एक हैं। मैं उनमें हूँ और तू मुझमें है, ताकि वे पूरी तरह से एक हो जाएँ ताकि दुनिया जान सके कि तूने मुझे भेजा है और तू उनसे प्यार करता है। यहाँ फिर से पिता का प्यार है, जैसा तूने मुझसे प्यार किया।

परमेश्वर के लोगों के लिए पिता के प्रेम का मापदंड पुत्र के लिए पिता का प्रेम है। ये बातें हमारे लिए बहुत ऊँची हैं। कौन उन्हें प्राप्त कर सकता है? यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उच्च पुरोहितीय प्रार्थना पढ़ने वाले लोग विश्वास में आ गए हैं।

ओह, ऐसा नहीं है। यह आसान नहीं है। ऐसा नहीं है कि जॉन का सुसमाचार एक नदी है जिसमें एक बच्चा इंतज़ार कर सकता है, एक हाथी तैर सकता है।

इसमें कुछ हाथी जैसे अंग हैं। लेकिन जब मंदिर पुलिस ने अध्याय सात में यहूदी नेताओं के सामने यीशु को नहीं लाया, तो उन्हें पता चला कि वह कहाँ है? उन्होंने कहा, कोई भी व्यक्ति कभी इस तरह नहीं बोला जैसा कि यह व्यक्ति बोलता था। नहीं, उसने ऐसा नहीं किया।

क्योंकि यह मनुष्य अद्वितीय रूप से ईश्वर का दिव्य मानव प्रकटकर्ता है, जब वह बोलता है, तो वह ईश्वर के शब्द बोलता है, यहाँ तक कि ये शब्द भी।

विश्वासियों में पुत्र का पारस्परिक निवास है, 23, पहला भाग, और पुत्र में पिता। इसलिए, दुनिया देहधारी मसीह पर विश्वास कर सकती है, और दुनिया उन सांसारिक लोगों को जान सकती है जो

मानते हैं कि पिता ने उनसे वैसा ही प्रेम किया जैसा उसने अपने प्रिय पुत्र से किया था। यह एक अद्भुत बात है।

हम अपने अगले व्याख्यान में उद्धार के और भी पहलुओं पर चर्चा करेंगे, लेकिन अभी के लिए इतना ही काफी है। आपके ध्यान के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन थियोलॉजी पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 16 है, मोक्ष, ईश्वर का प्रेम।